Name - Subela Ekka
Class - 1st Year "A"
Session - 2021-2023

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

पराधीनता प्राणी मात्र के लिए अभिशाप है। किसी की स्वतंत्रता का हनन करना जघन्य अपराध है। अंग्रेजों ने यह अपराध किया था, किन्तु स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयत्न, त्याग और बलिदान ने उनके मंसूबों पर पानी फेर दिया। लम्बे संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत में पराधीनता की काली रात का अंत हुआ और स्वाधीनता का सूरज चमका। तभी से ही हम इसे राष्ट्रीय-पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं।

यह पावन राष्ट्रीय त्यौहार उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जो आजादी की लड़ाई में हँसते-हँसते मौत को गले का हार बना लिए और आखिरी साँस तक कहते रहे :- "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, वक्त आने पर बता देंगे ऐ आसमां, हम अभी से क्या बताएं कि क्या हमारे दिल में है।" आज वक्त आ गया है कि हम अपने स्वार्थी स्वभाव से ऊठकर देश को सर्वोपरी समझें।

15 अगस्त हर भारतीय के लिए स्वतंत्रता, सुख, शाँति, समृद्धि एवं नवजीवन का प्रतीक है। इस दिन देश में बड़े सम्मान के साथ ध्वजारोहण होता है। इसी दिन भारत के प्रधानमंत्री लाल किले के प्राचीर पर तिरंगा झंडा फहराते हैं। कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। नेतागण, विचारक तथा समाज-सेवक जैसे गणमान्य व्यक्ति अपने भाषणों से हमें देश भक्ति, एकता तथा विकास संबंधी बातों से अवगत कराते हैं।

हमें स्वाधीनता तो मिल गई है किन्तु क्या यह वही स्वाधीनता है जिसके स्वप्न हमारे बलिदानी वीरों ने देखे थे? क्या यह वही स्वाधीनता है जिसके स्वप्न गाँधी जी ने देशवासियों को दिखाए थे? क्या यह वही स्वाधीनता है जिसके स्वप्न गुलामी की जंजीरों से जकड़ी भारत माता की आँखों में तैर रहे थे? आज चारों और अराजकता फैली हुई है। तू-तू मैं-मैं का बाजार गर्म है। घोटालों की कालिख से राष्ट्रीय नेताओं के चेहरे पुते हैं। देश की एकता और अखंडता दाँव पर लगी है। आज हमारे देश के बाहरी दुश्मनों

से अधिक खतरा देश के अंदर पनपती फिरका परस्ती ताकतों से है। विदेशी ताकतों से तो हम लड़ गए, परंतु अपने देश में फैली भ्रष्टाचार से कैसे लड़े, याद कीजिए- "मैं रोपड़ता हूँ जब गुजरा जमाना याद आता है, वो भगत सिंह का हँस के जाना तेरा बहुत याद आता है।" यानि भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु की कुर्बानियाँ भारत माँ की पुकार को सुना जब भारत माँ पुकार-पुकार कर कह रही थी, मेरे जवाँ तुमको भारत माँ ने पुकारा है मुझको दासता से मुक्त करो यह फर्ज तुम्हारा है। तूफानों से मत घबराना, बढ़ते कदम बढ़ाते जाना। बहाने पड़े लहू की दरियाँ पर रण-भूमि में तुम पीठ न दिखाना। आजादी के दीवाने अपने आजादी के पौधे को विकसित होता देख कर गा उठे- "सूख जाए न यह पौधा आजादी का। खून से अपने इसलिए इसे तर करते हैं।"

आजादी के इस पौधे को अपने रक्त से सिंचने वालों की कतार बहुत लम्बी है।

राष्ट्रीय पर्व से हमें संदेश लेना चाहिए। यह राष्ट्रीय पर्व हमें संदेश देता है लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें एकता और अखंडता का। स्वतंत्रता की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब हम स्वतंत्रता के साथ समानता और भाईचारा के साथ अपने देश की प्रगति करें।